दिनांक : 24 फरवरी, 2014

एनडीए और उसका आखिरी पड़ाव

– अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

जैसे–जैसे लोक सभा चुनाव 2014 नजदीक आते जा रहे हैं, राजनैतिक अटकलबाजियां शुरु हो चुकी हैं। दिल्ली के 'सब कुछ जानने वाले' कयास लगाने में लगे हुए हैं जो जमीनी हकीकत से परे हैं। ये उनके अपने आकलन हैं या जन सर्वेक्षण के संकेत हैं। 13 सितम्बर, 2013 तक जब भाजपा ने प्रधानमंत्री पद के लिए नरेन्द्र मोदी का नाम घोषित किया, तब तक अटकलें लगाई जा रही थीं कि 'क्या पार्टी किसी एक व्यक्ति को इसके लिए पेश कर पाएगी।' साथ ही यह दलीलें भी दी जा रही थी कि शासन का मुद्दा और सरकार के खिलाफ लहर गौण हो जाएगी और चुनावों का ध्रुवीकरण हो जाएगा। पिछले 25 वर्षों में मैंने जो रैलियां देखी हैं उनकी तुलना में मोदी की रैलियों का आकार विशालतम है। 1989 के बाद मैंने कभी भी पार्टी के सामान्य कार्यकर्ताओं में इतना उत्साह नहीं देखा; केवल 1998 और 1999 में ऐसी स्थिति देखने को मिली थी जब अटलजी को भारत के राजनैतिक क्षितिज में प्रधानमंत्री पद के लिए सबसे अधिक स्वीकार्य उम्मीदवार माना गया था। इसके बाद बहस का दूसरा सवाल है–कौन अन्य लोग भाजपा को समर्थन देंगे? क्या कोई नया सहयोगी भाजपा के साथ जुड़ेगा? हमारे अंदरुनी आकलन के अनुसार– बहुत से सहयोगी चुनाव से पहले या चुनाव के बाद भाजपा के साथ जुड़ेंगे, बशर्ते एक मजबूत भाजपा हो।

हाल ही में एक प्रतिष्ठित एजेंसी एसी नीलसन ने एबीपी न्यूज चैनल के लिए सर्वेक्षण किया। मैंने कभी इन सर्वेक्षणों की सत्यता की पुष्टि नहीं की। अगर जन सर्वेक्षण विश्वसनीय हैं तो मैं इन्हें 'सूचक' मानता हूं।

ये जन सर्वेक्षण क्या संकेत देते हैं। इन जन सर्वेक्षणों से स्पष्ट संकेत मिलता है कि अगले चुनाव में एक पार्टी होगी जो सैकड़े में होगी। यह संभवतः 200 का आंकड़ा पार कर लेगी। उसके सहयोगियों को भी कुछ सीटें मिलेंगी। भाजपा को भारत के उत्तरी, केन्द्रीय और पश्चिमी भागों के राज्यों में काफी सीटें मिलेंगी। पूर्वी और दक्षिणी हिस्से में स्थित बिहार और कर्नाटक में वह एक बार फिर उभरेगी। कुछ अन्य राज्यों में भाजपा संतुलन कायम करने का काम करेगी। परम्परागत रुप से गैर भाजपा राज्यों में, मोदी–भाजपा की गति से किसी सहयोगी को फायदा मिल सकता है, यहां तक कि बिना किसी सहयोगी के भी पार्टी को कुछ सीटें मिल सकती हैं।

सरकार गठन की लालसा रखने वाले बहुत हैं। निश्चित तौर पर सबसे आगे भाजपा–नेतृत्व वाला एनडीए है। अगर कांग्रेस दहाई के आंकड़े तक सिमट कर रह जाती है, तो वह परास्त होने वाली पार्टी रहेगी। वह किसी गठबंधन के केन्द्र में नहीं हो सकती। तीसरा मोर्चा और संघीय मोर्चा के अनेक दावेदार हैं। एक से अधिक राज्य में उपस्थिति के साथ अकेला दावेदार शायद ही कहीं है। पद के लिए सबसे आगे होने की क्षमता किसमें हैं यह ज्यादा महत्वपूर्ण है। अब यह सवाल किया जा रहा है कि भाजपा के नेतृत्व में एनडीए आखिरी पड़ाव तक कैसे पहुंचेगी?

ये सभी किताबी अटकलें हैं। राजनैतिक पंडित इनका समर्थन करेंगे। अगर किसी को जमीनी हकीकत का पता होगा तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि मोदी की रैलियों में आने वाली भारी भीड़ एक साफ संदेश दे रही है–जो सबसे आगे चल रहा है उसका स्कोर जन सर्वेक्षणों के आकलन से भी ज्यादा है। अनेक राज्यों में छोटे–छोटे दलों को यह तय करना होगा कि वे आगे क्या करना चाहते हैं। कुछ राज्यों में बड़े क्षेत्रीय राजनैतिक दल भी हैं जो राज्यों में कांग्रेस के खिलाफ पारंपरिक राजनीति करते रहे हैं। केन्द्र में समर्थन देकर अथवा समर्थन लेकर कांग्रेस के साथ गठबंधन का विकल्प कोई दीर्घकालिक विकल्प नहीं है। इनमें से अधिकतर दलों के लिए सीमित विकल्प है। अगर मोदी की रेटिंग 50 प्रतिशत है, तो निश्चित तौर पर इसका हर राज्य पर असर पड़ेगा। मुझे आश्चर्य नहीं होगा जब हम आखिरी पड़ाव तक अकेले ही पहुंच जाएंगे।

*****